राष्ट्रनायक–काव्यांजलि

Dr. Amit Jain
(M.Com, Ph.D, MSW, LLB)
Address for Coresspondance
439 Indra Colony, Street No 4, Repura Road, Firozabad, 283203 (UP) India
Email- dr.amit0190@gmail.com, E-mail- amit_0190@rediffmail.com
Mob- +91 9837208441, 9045311021, 9719717951, 9258416887

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - LD-20260185781
Date 20/04/2026

"राष्ट्र के भविष्य को आकार देने के स्पष्ट उद्देश्य के साथ एक कुशल रणनीतिकार और संयमी व्यक्ति, जो चुनौतियों के बावजूद अपने आदर्शों पर अडिग रहकर; निःस्वार्थ भाव से लोगों को आगे बढ़ने और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने के लिए प्रेरित करने का कार्य सहर्ष स्वीकार करता है; राष्ट्रनायक हैं। समय की माँग से राष्ट्रनायक उभरते हैं और समाज के लिए सकारात्मक ऊर्जा का सबसे प्रमुख स्रोत बन जाते हैं। राष्ट्र का अस्तित्व; अपने नायक के इर्द–गिर्द घूमता है इसलिए नायक के बिना लोकतंत्र की कल्पना साकार नहीं होती है। ये जीवित हों या मृत; लोगों की स्मृतियों में हमेशा रहते हैं। राष्ट्र को इनकी ऐतिहासिकता, बलिदान और आदर्शों को संजोने के लिए कोई न कोई अवसर ढूँढ़ना चाहिए; इसमें जन्मजयन्ती, पुण्यतिथि, गौरव दिवस या कोई विशेष दिन हो सकता है।"

–डॉ. अमित जैन

"किसी राष्ट्रनायक पर प्रश्न चिन्ह लगाने से पूर्व; सर्वप्रथम उस पर पूर्ण अध्ययन अवश्य कर लें; उसके उपरान्त कम से कम एक वर्ष तक किसी पिछड़े हुए क्षेत्र में तन–मन–धन से सेवा करके देखें। प्रतिकूल परिस्थितियों का जवाब राष्ट्रनायक की तरह; उपवास करके, भोजन–पानी त्यागकर आमरण अनशन से दें। सदैव अहिंसक, अवैतनिक और परोपकारी रहें; ऐसा करते ही आपका मन, बुद्धि और इन्द्रियाँ; राष्ट्रनायकों के व्यक्तित्व का स्तर और आप जैसे सामान्य व्यक्ति के स्तर में अन्तर की बारीकी क्या है; समझने में समर्थ हो सकेंगे; यह भी सम्भव है कि उनके प्रति ईर्ष्या, द्वेष और घृणा जैसे पूर्वाग्रह से मुक्त हो जाएँ ?"

–डॉ. अमित जैन

भूमिका

राष्ट्रनायकों के कार्यों को काव्यरूप देकर कविता में लिखना; मैंने अपनी प्राथमिकता माना है। यह करने के लिए मुझे कई वर्ष तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। इसका कारण यह था कि राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी (श्री मोहनदास करमचंद गाँधी) और देश के वीर सैनिकों के कार्य तो उपलब्ध थे, किन्तु माननीय प्रधानमन्त्रीजी के कार्यों की पूर्णता में उनके दो कार्यकाल लग गए। अतः प्रतीक्षा स्वाभाविक थी। दस वर्षों की प्रतीक्षा को मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ [illegible] कार्यों को पूरा होते देखा। अब उपरोक्त तीनों के कार्य मेरे पास उपलब्ध थे और

अपनी प्रतिबद्धता को पूरा करने का अवसर था। अपने हृदय की गहराइयों में अंकुरित हुए भावों से मैंने तीनों के कार्यों को काव्यरूप दिया है।

राष्ट्रनायक–काव्यांजलि

काव्य की यह विशेषता है कि चुने हुए तथा कम शब्दों में भावों की गहराई, भाषा का सौन्दर्य, रस, छन्द, लय, अलंकार और तुकबन्दी; इसे कलात्मक बनाते हैं। यह पाठक के मन में गहरी भावनाएँ जाग्रत कर देती हैं। इसके पीछे कई बार एक सामाजिक संदेश भी होता है। कल्पना को उड़ान देकर यह; भाषा के सौन्दर्य के माध्यम से मन को आनन्दित कर देती है। काव्य में यदि राष्ट्रनायक का वर्णन हो तो इसमें **वीर रस** का जुड़ना स्वाभाविक है। संक्षिप्तता और ध्वनि जैसे विशेषणों से सजी हुई, इन कविताओं में मैंने मनोभावों की अभिव्यक्ति; राष्ट्रनायकों को काव्यबद्ध करके की है।

विषय एवं शीर्षक का चयन

राष्ट्रनायक–काव्यांजलि शीर्षक; राष्ट्रनायकों के जीवन व कार्यों को काव्यबद्ध कर लिखी गई; कविताओं का संकलन है। विषय को सार्थक बनाने के लिए इस शीर्षक का चयन उपयुक्त है, क्योंकि राष्ट्रनायकों पर शोध तथा उन पर पाँच कविताओं का संकलन; यहाँ एक साथ प्रस्तुत है। **कॉपीराइट का विषय– 'राष्ट्रनायक–काव्यांजलि' है।**

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - LD-20260185781
Date 20/04/2026

अध्ययन का उद्देश्य

राष्ट्रनायकों का असाधारण व्यक्तित्व, उनकी दूरदर्शिता, अहिंसक नीतियाँ, राष्ट्रप्रेम उन्हें जन–जन में लोकप्रिय व सम्मानित बना देता है। ऐसे पूर्वजों पर सभी को गर्व होना चाहिए। उन पर किए गए इस शोध का उद्देश्य लोगों को यह समझाना है कि किसी की आड़ लेकर अथवा प्रत्यक्षरूप से कभी भी, राष्ट्रनायकों को अपमानित करने का प्रयास न किया जाय।

राष्ट्रनायक–काव्यांजलि के नायक

राष्ट्रनायक–काव्यांजलि में हमारे नायक हैं–पूज्य राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीजी, देश के बहादुर सैनिक और माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदीजी। प्रस्तुत कविताओं में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भारतीय राष्ट्रनायक महात्मा गाँधीजी और भारत के सम्माननीय सैनिकों के अदम्य साहस, वीरता एवं सर्वोच्च बलिदान को काव्यबद्ध किया गया है। देश के प्रत्येक व्यक्ति के सुख का आधार; हमारे सैनिक हैं। इसके अतिरिक्त विश्व के सबसे लोकप्रिय नेता; भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी को उनके कार्यों के अनुसार काव्यबद्ध किया गया है।

1. राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीजी को काव्यबद्ध करने के लिए **'महात्मा निर्दोष है'** नामक कविता रची है।

2. देश के वीर सैनिकों के कार्यों को **'मेरे हिन्द का जवान'** नामक कविता में काव्यबद्ध किया गया है।

3. भारत के माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदीजी के कार्यों को तीन कविताओं में प्रस्तुत किया है– जिनमें **'भारत पर्व; थाली बजाओ–फरफेंदुए भगाओ'**, **'पता चलना चाहिए'** ... **के बाप'** हैं।

dr.amit0190@gmail.com

महात्मा गाँधीजी

"मैं चाहता हूँ कि यदि मुझे दूसरा जन्म दिया जाय, तो उन जातियों में मेरा जन्म हो जो भारत में अछूत मानी जाती हैं; जिसमें उनके जीवन की कठिनाइयाँ, उनके अपमान, तिरस्कार, अत्याचार और अनाचार भली–भाँति समझ सकूँ और उनके साथ जो अत्याचार किए जाते हैं; उनको स्वयं मैं सहन करूँ।"

–राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी

"महात्मा गाँधी का युद्ध न केवल भारत के गरीबों, मजदूरों का युद्ध है; महात्माजी का त्याग न केवल भारतीयों के लिए है; वरन् वह संसार के सभी दुखी–दरिद्रों के लिए है। उनका आंदोलन किसी एक कौम और धर्म के बन्धन में परिणत नहीं है, बल्कि वह विश्व के सभी धर्मों, सम्प्रदायों और जातियों के लिए समान रूप से है। जो लोग महात्माजी को इस रूप में नहीं समझते, वे भूल करते हैं।"

–श्री मोतीलाल घोष
'अमृत बाजार' पत्रिका के सम्पादक सन 1922

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - LD-20260185781
Date 20/04/2026

"समाज में तथाकथित प्रतिष्ठित कुछ गपोड़ी लोग; गाँधीजी को व्यर्थ का आन्दोलन चलाने वाला समझते हैं। वे न केवल अपने को गलती और भ्रम में रखते हैं, वल्कि वे सत्य की हत्या करते हैं। उनको चाहिए कि वे महात्मा गाँधीजी के चरित्र और कार्यों का अध्ययन करें; तभी उनके व्यक्तित्व को समझने में समर्थ हो सकेंगे। गाँधीजी को देखकर विश्व विस्मित होता था, जबकि गाँधीजी स्वयं को एक जुलाहा और किसान कहते थे। महात्मा गाँधी कौन हैं; यह जानने के लिए इससे अधिक और क्या प्रमाण हो सकते हैं ?"

–डॉ. अमित जैन

कुछ व्यक्तित्व इतने शालीन और प्रबुद्ध (मानसिक रूप से परिपक्व, चैतन्य, सचेत, जाग्रत, ज्ञानी, विद्वान) होते हैं कि उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि होता है। इसकी समृद्धि के लिए उनकी प्रतिबद्धता; जीवन पर्यन्त बनी रहती है। वे अपने अन्तिम समय तक प्रयत्नशील बने रहते हैं कि देश के प्रत्येक नागरिक को राष्ट्रवाद की भावना से ओत–प्रोत (गहराई तक डूबा हुआ) कर दें। सीमित बुद्धि के दायरों में जीवन–यापन करने वाले बहुत से लोग, उनकी बातों को सही ढ़ंग से न समझ सकने के कारण, उनसे इस हद तक ईर्ष्या और घृणा करने लगते हैं कि उनके विरुद्ध षडयन्त्रकारी अभियान चलाते हैं एवं असफल होने पर उनका जीवन तक समाप्त कर डालते हैं।

ऐसे ही व्यक्तित्व वैरिस्टर मोहनदास करमचन्द गाँधी थे। 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर में जन्मे थे। सन 1888 से सन 1891 तक यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन (इंग्लैंड) से लॉ करके वैरिस्टर बने। सन 1891 में मुम्बई में उनकी मुलाकात जैनों के 25वें तीर्थङ्कर कहे जाने वाले **'श्रीमद् राजचन्द्र जैन'** से हुई। उन्होंने गाँधीजी की समस्त धार्मिक एवं सामाजिक शंकाओं का उचित समाधान कर, उनके भ्रम को दूर कर दिया। तब से वे महात्मा गाँधीजी के आध्यात्मिक गुरु और मार्गदर्शक बने रहे। उनके अहिंसा और ब्रह्मचर्य का गहरा प्रभाव गाँधीजी पर पड़ा। **'आत्मसिद्धि शास्त्र', 'मोक्षमाला'** और

dr.amit0190@gmail.com

'श्री नीति बोधक' जैसी उनकी रचनाएँ गाँधीजी ने पढ़ी थीं। दोनों के बीच में पत्राचार द्वारा आध्यात्मिक विषयों पर विचार विमर्श होता था। गाँधीजी को इससे महात्मा बनने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रेरणा मिली। यह पत्र व्यवहार गाँधीजी के दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान भी निरन्तर चलता रहा। गाँधीजी ने उन्हें **'महात्मा' के 'महात्मा'** कहा था तथा स्वयं को उनका पुजारी कहा था।

सन 1893 में भारतीय मूल के एक गुजराती व्यापारी **दादा अब्दुल्ला** के कानूनी मामले के लिए वे दक्षिण अफ्रीका गए। दक्षिण अफ्रीका की धरती पर कदम रखने वाले वे पहले भारतीय वैरिस्टर थे। सन 1914 तक 21 वर्ष अफ्रीका में रहकर, वहाँ की सरकार द्वारा **नस्ल–भेद** और अत्याचारपूर्ण व्यवहार के शिकार भारतीय नागरिकों के अधिकारों के संरक्षण के लिए आंदोलन किया। अफ्रीका में उन्हें बहुत भेदभाव का सामना करना पड़ा। रेल की प्रथम श्रेणी की टिकट होने के बाद भी उन्हें धक्का देकर ट्रेन से बाहर फेंक दिया गया; उनसे कहा गया कि तुम **काले** हो अतः हम गोरों के साथ यात्रा नहीं कर सकते। तृतीय श्रेणी के डिब्बे में उन्हें चालक की मार झेलनी पड़ी। कई होटलों को उनके लिए वर्जित कर दिया गया। अदालत में भी उन्हें जज ने पगड़ी उतारने का आदेश दिया। गाँधीजी घबराए नहीं, बल्कि इन सारी घटनाओं को अपनी ताकत बनाकर लोगों को सामाजिक सुरक्षा और न्याय; दिलाकर रहे। इस अनुभव ने उन्हें एक महान नेता बना दिया।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - LD-202601855781
Date 20/04/2026

9 जनवरी सन 1915 को भारत लौटे। सन 1916 से सन 1945 तक भारत में स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेता बने तथा लोगों को संगठित करके उसे जन–आन्दोलन बना दिया और राष्ट्रपिता कहलाए। सन 1922 में भारत के लिए स्वतन्त्र संविधान की माँग की थी। **तीर्थङ्कर महावीर स्वामी के अहिंसा आदि सिद्धान्तों को अपनाकर** सत्याग्रह के माध्यम से ब्रिटिश शासन से भारत को 15 अगस्त सन 1947 को मुक्ति दिलाई और विश्वभर में मानवाधिकारों व स्वतन्त्रता के प्रतीक बन गए।

कितना हृदय विदारक और अकल्पनीय है कि एक भारतीय नाथूराम विनायक गोडसे ने कानून अपने हाथ में लिया और 30 नवम्बर 1948 को दिल्ली के विडला हाउस में प्रार्थना सभा के लिए जाते समय 79 वर्षीय गाँधीजी की गोली मारकर हत्या कर दी ? राष्ट्रपिता कहलाने वाले इतने बड़े नेता के पास सम्भवतः सुरक्षा गार्डों की तैनाती नहीं थी अथवा वे स्वयं सुरक्षा घेरा नहीं चाहते थे। उनकी मृत्यु का दिन; शहीद दिवस घोषित कर दिया गया। भारतीय मुद्रा पर इनका चित्र छापा गया है। दुनिया के लिए आदर्श बने गाँधीजी को उनके अपने देश में बुरा कहने वालों की कोई कमी नहीं है। ऐसा करने के लिए लोग अपनी मर्यादा की सीमाओं से आगे निकल जाते हैं, जबकि किसी के चारित्र का मूल्यांकन करके, परिणाम निकालने से पहले उसके समय की परिस्थितियों एवं उसके द्वारा किए गए कार्य की स्थितियों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना अति आवश्यक है। यदि ऐसा नहीं किया गया है तो स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि जो व्यक्ति आपके प्रति आज ईर्ष्या और घृणा प्रकट कर रहा है; निश्चित रूप से इसकी तैयारी; वह बहुत पहले से कर रहा था।

गाँधीजी चाहते तो अपनी दक्षिण अफ्रीका की सफलता का सहारा लेकर, अपने वैरिस्टर ... आगे बढ़ाते और विलासिता का जीवन जी सकते थे, किन्तु वे यह जानते हुए

 dr.amit0190@gmail.com

भारत के स्वतन्त्रता आंदोलन में उतरे कि ब्रिटिश शासन का विरोध करने पर, न तो वे सुरक्षित रहेंगे और न उनका परिवार।

30 वर्ष तक ब्रिटिश शासन के सामने खड़े होने के लिए, उन्होंने जन सामान्य को संगठित करके, ब्रिटिश शासन के सामने निश्चित रूप से बहुत सशक्त चुनौती प्रस्तुत की थी; जिसका जवाब पूरा ब्रिटिश शासन मिलकर नहीं दे सका। कानूनी ज्ञान, शुद्ध उच्चारण और धारा प्रवाह अंग्रेजी बोलने की अपनी क्षमता से, वे तीस वर्ष तक ब्रिटिश शासन को कानून पढ़ाते रहे। पूरा ब्रिटिश शासन मिलकर उनकी हत्या नहीं कर सका, क्योंकि वे कानूनी–रूप से मजबूत थे। उनका आंदोलन भी अहिंसक था। कमजोर करने के उद्देश्य से उन्हें बार–बार गिरफ्तार कर जेल भेजा जाता था। पूरा विश्व उन पर नजर रखे हुए था कि किस प्रकार एक महात्मा पूरी दुनियाँ के गरीबों का प्रतिनिधि बनकर संघर्ष कर रहा है और जिसने किसी दवाब का प्रयोग किए बिना ही ब्रिटिश शासन की क्रूरता की सच्चाई दुनियाँ के सामने रख दी है ? कई अंग्रेजी लेखकों ने महात्मा गाँधीजी पर शोध किया और उन पर किताबें लिखकर; उनका गुणगान किया; जिनमें लुई फिशर, जॉर्ज ऑरवेल, डेनिस हॉल्टन, जे.टी.एफ. जॉर्डन्स प्रमुख हैं।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - LD-20260185781
Date 20/04/2026

भारत के प्रसिद्ध एवं स्वर्ग सिधार चुके कुछ बड़े राजनेताओं का नाम; लोग अपने स्वार्थवश पूज रहे हैं। अहिंसावादी गाँधीजी के जीवित रहते; किसी न किसी के स्वार्थ की सिद्धि में कमी अवश्य आई होगी इसीलिए उनकी हत्या कर दी गई। नाथूराम विनायक गोडसे भी इस घृणित कार्य को करके खुश नहीं हुआ होगा, क्योंकि हत्या कोई और करता है और स्वार्थ किसी और का पूरा होता है। आधा–अधूरा ज्ञान रखने वालों को गाँधीजी के महान व्यक्तित्व का मूल्यांकन नहीं करना चाहिए। गाँधीजी मेरे आदर्श हैं। उनके जीवन को काव्यबद्ध करती हुई मेरी यह कविता; उनको समर्पित है।

गाँधीजी की हत्या पर विचारणीय प्रश्न ?

1. क्या नाथूराम विनायक गोडसे से भी ज्यादा गुस्सा, गाँधीजी पर; ब्रिटिश शासन को कभी नहीं आया होगा; जिन्होंने जन–आंदोलन करके उनकी चूलें हिलाकर (पूरी तरह से कमजोर कर देना, अस्त–व्यस्त कर देना) रख दी थीं ? क्या उन्हें कभी गाँधीजी की हत्या करने का ख्याल नहीं आया होगा, जबकि गाँधीजी उनकी राह में सबसे बड़ी अडचन थे, किन्तु ब्रिटिश शासन ने ऐसा नहीं किया ? कारण स्पष्ट है कि गाँधीजी वैरिस्टर थे, कानून के ज्ञाता थे एवं अपनी अहिंसक विचारधारा से विश्वविख्यात थे। वे भारत आकर नेता नहीं बने थे, बल्कि अफ्रीका से वैश्विक नेता बनकर आए थे। भारत में उनके पीछे केवल जन–आंदोलन की ही ताकत नहीं थी, बल्कि अफ्रीका में 21 वर्ष का विपरीत परिस्थितियों में वकालत करने का अनुभव भी उनके साथ था। संभवतः इसीलिए अथवा अन्तर्राष्ट्रीय विरोध के डर से गाँधीजी की हत्या करने में ब्रिटिश शासन को चारों ओर से अपनी हार नजर आ रही होगी।

2. देश की पूरी जनसंख्या में केवल एक व्यक्ति को ही गाँधीजी पर इतना क्रोध क्यों आया; जिससे वो इतना हिंसक हो गया कि हजारों लोगों की उपस्थिति में उन पर गोली चला दी? भारत पर क्रूरता से शासन करने वाले अंग्रेजों को भी, उसने क्रूरता के मामले में पीछे छोड़ दिया। गोली अथवा बन्दूक किसी और की थी और कन्धा नाथूराम विनायक गोडसे का था।

dr.amit0190@gmail.com

3. गाँधीजी के जीवित रहते यदि नाथूराम विनायक गोडसे; उनसे वार्ता कर अपनी गुस्सा का कारण बताता तो संभवतः मनोवांछित परिणाम निकल सकता था, किन्तु उसने ऐसा नहीं चाहा और **महात्मा को समय से पहले, हमसे छीन लिया।** उसने उनके शरीर का जरूर नाश कर दिया, किन्तु गाँधीजी ने जो स्फूर्ति संसार में उत्पन्न की थी; उसका नाश नहीं कर सका।

4. क्या महात्मा गाँधीजी को कभी यह विचार आया होगा कि उनको इस तरह विदाई दी जाएगी ? उनकी हत्या का दृश्य देखने वालों को कितना गहरा सदमा पहुँचा होगा ? दिल फाड़ देने वाली इस घटना से गाँधीजी के अनुयायियों को लगने वाला गहरा आघात तो अकल्पनीय है।

5. जब तक भारत देश है; महात्मा गाँधीजी राष्ट्रनायक और राष्ट्रपिता कहलाएँगे। नाथूराम गोडसे; उनका हत्यारा ही कहलाएगा। फाँसी होना साबित करता है कि नाथूराम को कानून ने दोषी करार दिया था। यह सत्य कभी बदल नहीं सकता।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - LD-20260185781
Date 20/04/2026

महात्मा निर्दोष है

रचयिता– डॉ. अमित जैन

एक डिवेट में
मुझसे
किसी दुर्जन का नाम पूछा गया,
मैं तपाक से बोला–
नाथूराम विनायक गौडसे,
तब लोग चिल्लाकर
पूछने लगे–
बापू को गोली मारी
क्या सिर्फ इसलिए ?
मैंने वकील के अंदाज में कहा–
कानून अपने हाथ में लिया था
इसलिए। 1

लोग शांत हो गए
डिवेट आगे बढ़ा,
मैंने कहा–
गाँधीजी मेरे नायक हैं,
लोगों ने पूछा–
इसका क्या कारण है ?
मैं बोला–
बापू ने श्रीमद् राजचन्द्र जैन को
अपना गुरु बनाया,
महावीर स्वामी का

dr.amit0190@gmail.com

अहिंसा महाव्रत अपना लिया,
दुनियाँ में इसकी शक्ति का
परचम लहरा दिया,
अछूतों को भी पावन किया
उनको हरिजन नाम दिया,
सत्याग्रह और जन–आंदोलन से
भारत को आजाद कराया,
लोग चिल्लाने लगे–
उन्होंने पाकिस्तान भी बनाया,
मैं बोला–
यह तो जिन्ना की इच्छा थी
उसी ने बंटवारा कराया
आरोप गाँधीजी पर लगाया,
भारत की जनता को
पूरा पागल बनाया। 2

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - LD-20260185781
Date 20/04/2026

लोगों ने पूछा–
ऐसा कैसे हुआ ?
मैं बोला–
यह हुआ
गुप्त समझौते के तहत;
बापू थे उससे बिल्कुल अलग,
विश्वास नहीं तो
370 के समर्थकों से पूछो
गुपकार गैंग से पूछो। 3

लोग फिर चिल्लाए–
तुम्हें कैसे पता है ?
मैं बोला–
कीमती किताबों में पढ़ा है
पुराने दस्तावेजों में भी लिखा है,
अफ्रीका में उन्होंने अपनी
वकालत का डंका बजाया,
दबे–कुचले हुए लोगों को
उनका मानव–अधिकार दिलाया,
भारत आकर
जब कपड़े त्याग दिए
तो गरीबों को
उनमें बापू दिख गए,
गाँधीजी ने स्वयं को
महात्मा बनाया

dr.amit0190@gmail.com

अंग्रेजों को तीस वर्ष तक
कानून का पाठ पढ़ाया,
मामूली मुकदमों में लोगों को–
फाँसी पर चढ़ाने वाले अंग्रेज–
नतमस्तक हो गए,
लंगोटी वाले के डर से
हिन्दुस्तान छोड़ गए,
इसलिए ये फकीर
देश के दिल में समा गया
और राष्ट्रपिता का दर्जा पा गया। 4

इस बार लोग चिल्लाए नहीं,
बल्कि पूछा–
हमें और तुम्हें
अलग–अलग क्यों पता है ?
मैं बोला–
तुमने तो सिर्फ
दूसरों से सुना है,
किन्तु वो आधा–अधूरा है,
विध्वंस के बीज और
लड़ाई झगड़े की जड़ पर
विश्वास कर लेना,
आपका ज्ञान नहीं
सबसे बड़ा अज्ञान है। 5

लोगों ने नम्र होकर पूछा–
सच क्या है ?
मैं बोला–
मैंने तो खंगाला है
तब सत्य को पाया है
कि महात्मा निर्दोष है,
नाथूराम भी प्रमाण जुटाता
तो सज्जनों में नाम लिखवाता,
बापू ने यदि बंटवारा करवाया होता
तो पाकिस्तान की संसद में–
उनका फोटो लगा होता,
लोग मुस्कराए तालियाँ बजाईं
डिवेट समाप्त हो गया। 6

डिवेट के बाद

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - LD-20260185781
Date 20/04/2026

dr.amit0190@gmail.com

कई लोग मुझसे मिले,
बधाई देकर बोले–
आपका अपना एक अंदाज था
बातों में भी प्रमाण था,
सच आपकी तरह बताया जाए
तो समझ आता है,
अन्यथा दोषी कोई और होता है
बताया कोई और जाता है,
आज हम भी वादा करते हैं
बिना प्रमाण के मुहँ न खोलेंगे,
निर्णय करने से पहले
आपकी तरह जरूर सोचेंगे। 7

इस बार मैं मुस्कराया
मेरी आँखों में आँसू आ गए,
ऐसा लगा जैसे भटके हुए भाई
सही राह पर आ गए। 8

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - LD-20260185781
Date 20/04/2026

भारतीय सैनिक

"यौवन शक्ति से भरपूर भारत का नौजवान; राष्ट्र रक्षा के लिए सैनिक बनने का स्वप्न देखता है और कई वर्ष की तैयारी के बाद सेना में नियुक्ति पाता है। भरोसेमंद रक्षक और सजग प्रहरी बनकर विश्वास के प्रतीक के रूप में स्वयं को स्थापित करता है और सर्वोच्च बलिदान देने के लिए हमेशा तत्पर रहता है। इस सबके पीछे अवश्य ही किसी राष्ट्रनायक, क्रान्तिकारी अथवा अमर शहीद की प्रेरणा है।"

–डॉ. अमित जैन

आज भारत देश की सीमाओं पर स्थापित ऊँची से ऊँची सेना की चौकियों के ऊपर आसमान में तिरंगा शान से क्यों लहरा रहा है ? इसका जबाव है–हुँकार भरता हुआ; हिन्द का जवान। जिसके साहस और बलिदान की विजयगाथा दसों दिशाओं में लिखी है। वो जानता है कि तिरंगे में लिपटा हुआ उसका पार्थिव शरीर; देश का गौरव बढ़ाएगा। धन्य है इन जवानों की जननी माताएँ, जो आँसू बहाने के बजाय कहती हैं कि हमारे घर के सभी पुरुष; देश की सेना के लिए हैं। जम्मू–कश्मीर में धारा 370 हटने से पहले भारतीय सैनिकों के लिए राह कठिन थी। अलगाववादियों से कदम–कदम पर मिलने वाली चुनौतियों के सामने नियन्त्रित रहकर कार्य करना आसान नहीं था। कई बार अलगाववादी; सैनिकों के साथ अभद्रता भी करते थे। उस स्थिति में भी देश के बहादुर सैनिक तिरंगे की शान को ऊँचा रखने के लिए अपने प्राणों की चिंता किए बिना, सीमा पर सचेत रहते हुए; बड़े साहस से आतंकवाद का मुहँतोड़ जवाब देते थे। धारा 370 हटने के बाद जम्मू–कश्मीर; केन्द्र शासित प्रदेश हो गया और अलगाववाद कमजोर पड़ गया। इसके अतिरिक्त सीमा घुसपैठ को रोकना भी बहुत बड़ी चुनौती थी।

dr.amit0190@gmail.com

भारतीय सेना का कार्यक्षेत्र बहुत विस्तृत है; देश की रक्षा, सीमाओं की सुरक्षा, आन्तरिक सुरक्षा बनाए रखने के साथ–साथ आतंकवाद और नक्सलवाद को नेस्तनाबूद करना, भूस्खलन, भूकम्प, बाढ़, सूखा और महामारी जैसी प्राकृतिक आपदाओं में सहायता करना, रेल दुर्घटना, खदानों में विस्फोट जैसी आपात–स्थितियों में राहत कार्य चलाकर, सेना सबसे आगे होती है। कई बार बहुत गहरे बोरवेल में गिरे हुए बच्चों को, खदानों व सुरंगों में फंसे हुए; जीवन–मृत्यु के बीच में झूलते हुए श्रमिकों के लिए बचाव अभियान चलाकर, सेना ने उन्हें सुरक्षित निकाला है। युद्ध की स्थिति में शान्ति बहाल करना, संयुक्त राष्ट्र के शान्ति मिशन में भाग लेना तथा संकट–काल में दूसरे देशों में फंसे हुए भारतीय नागरिकों को वापिस लाना आदि सेना के प्रमुख कार्य हैं। यह सारे कार्य जिनके द्वारा पूर्ण किए जाते हैं; वे हैं–सेना के बहादुर सैनिक, जो अपने कार्य में हमेशा तत्पर रहते हैं और अपने कर्तव्य का निर्वाह संविधान के दायरे में रहकर करते हैं। वर्तमान सरकार के प्रयासों से सेना आत्मनिर्भर बन रही है। देश के अग्रिम पंक्ति के नायक के जीवन को काव्यबद्ध करके कवितारूप देकर; मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे यह मेरे सर्वश्रेष्ठ कार्यों में से एक है। भारत की महान सेना, वीर सैनिकों और उनकी पूज्य माताओं को यह कविता समर्पित है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - LD-20260185781
Date 20/04/2026

मेरे हिन्द का जवान

रचयिता– डॉ. अमित जैन

सीमाओं पर धमक दुश्मनों में धाक
बड़ी होशियारी से करता है
सर्जिकल स्ट्राइक या शान्तिदूत का काम,
मेघदूत, करुणा, विजय, ब्लूस्टार
और ऑपरेशन सिन्दूर चला दिया,
कश्मीर, कारगिल, पुलवामा में
ढ़ेर सारे खूँखार पाकिस्तानी आतंकियों को
ठिकाने लगा दिया,
डोकलाम में चीनी घुसपैठियों की
नींद हराम कर दी,
विजयगाथा अपनी चहुँओर लिख दी
अर्जुन टैंक, नाग, त्रिशूल,
पृथ्वी, अग्नि और ब्रह्मोस
घातक मिसाइलों से तैयार
ऐसी भरता हुंकार
हिन्द का जवान! मेरे हिन्द का जवान। 1

इसके भी हैं;
माता–पिता, बहिन, पत्नी प्यारी
पर; इस लाल की
देशभक्ति सभी पर भारी,
जंगल की आग, कड़कड़ाती शरद

dr.amit0190@gmail.com

बर्फीला तूफान या तपता रेगिस्तान,
दलदल और भयानक बाढ़ में
घने कोहरे और अंधकार में,
बढ़ते कदम, रुकने नहीं दिए,
पर्वतों का भी सीना चीरकर
रास्ते नए बना दिए,
आपातकाल में जो फंस गए
जान उनकी बचाने को
देवदूत वो बन गए,
सैनिक पहरा देता है
तब देश चैन से सोता है,
तेज आँधियों में भी है इसकी शान
अनुशासन ही इसकी पहचान,
शेर जैसे इस लाल की जननी को
हमारा कोटि–कोटि प्रणाम
हिन्द का जवान! मेरे हिन्द का जवान। 2

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - LD-20260185781
Date 20/04/2026

जल–थल–नभ तीनों में
रखता है धौंस,
मौत से आँख–मिचोली
इसका है शौक,
एक–एक सैनिक ने ठाना है,
अंतिम साँस तक लड़कर
दुश्मन को हराना है–
जीत का परचम लहराना है,
ऐसा मचाता है कोहराम
मानो मौत का हो अवतार,
फौजी हमारा बड़ा बलवान
हिन्द का जवान! मेरे हिन्द का जवान। 3

युद्ध क्षेत्र में
लहूलुहान हो जाता है,
तो कभी विस्फोट में
चिथड़े–चिथड़े हो जाता है,
शौर्य, पराक्रम के महायोद्धा को
तब शहीद कहा जाता है,
सम्मान के साथ इसे
परमवीर चक्र दिया जाता है,
गोलियों की बौछार से निडर,
साहस का सूबेदार
हिन्द का जवान! मेरे हिन्द का जवान। 4

dr.amit0190@gmail.com

वतन का सुखदाता शहादत पर मुस्कराता
तिरंगे में लिपटा अंग्रिम पंक्ति का नायक,
देशपुत्र को तोपें करें सलाम
जन–गण–मन का पैगाम
हिन्द का जवान! मेरे हिन्द का जवान। 5

माननीय प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदीजी

"भारत के माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी की विश्व में बढ़ती हुई लोकप्रियता को देखकर एक बात समझ में आती है कि दुनियाँ के अधिकांश देशों के नागरिक चाहते हैं कि उनके देश के प्रधानमन्त्री भी; मोदीजी जैसे हों। भारत का क्षेत्रफल विश्व का 2.42 प्रतिशत है; यदि 97.58 प्रतिशत शेष विश्व भी मोदीजी की सोच पर काम करना शुरु कर दे तो युद्ध के लिए कहीं स्थान नहीं बचेगा।"

–डॉ. अमित जैन

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. -LD-20260185781
Date 20/04/2026

नरेन्द्र दामोदरदास मोदी; बचपन में चाय बेचने से लेकर जीवन की विभिन्न चुनौतियों एवं प्रतिकूल परिस्थितियों के सामने, अपने संघर्ष की क्षमता से लोहा लेते हुए; दुनियाँ के सबसे बड़े संगठन **'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ'** के विश्वासपात्र कार्यकर्ता बने। लोगों के बीच जाकर जमीनी हकीकत को जाना, लोक व्यवहार को पहचाना और सन 2001 से 2014 तक, 13 साल लगातार गुजरात राज्य के मुख्यमंत्री रहे। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र; भारत के 14वें प्रधानमंत्री के रूप में सन 2014 सन 2026 तक लगातार तीसरा कार्यकाल पूर्ण करने की ओर अग्रसर हैं। अपने कार्य के बल और विकास के एजेंड़ा के दम पर चुनाव जीता जा सकता है; मोदीजी इस बात का प्रमाण हैं। उनके जीवन की महान उपलब्धियों को कवितारूप देना किसी स्वप्न के सच होने जैसा है।

सर्वविदित है और किताबों में भी लिखा है कि 15 अगस्त 1947 से 17 मई 1964 तक भारत के माननीय प्रथम प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू; बच्चों में **चाचा** के नाम से लोकप्रिय थे, किन्तु उन्हें हमने देखा नहीं था। उनके बाद सन 1964 से सन 2013 तक देश ने कई प्रधानमंत्री देखे, किन्तु लोकप्रिय शब्द किसी के साथ नहीं जुड़ा। सन 2014 में श्री नरेन्द्र मोदी भारत के माननीय प्रधानमंत्री बने। उन्हीं के मुख से पहली बार सुना कि प्रधानमन्त्री; **प्रधान सेवक** होता है। गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर देश की आम जनता के बीच में जाकर उन्हें मिलता देखा तो उनका व्यक्तित्व समझ में आने लगा।

नीची जाति समझे जाने वाले लोगों के पैरों को, वे अपने हाथों से धोते हैं। अपङ्ग· मनुष्यों को उन्होंने **दिव्यांग** नाम दिया है। देश की जनता के सुझावों को जानने के लिए सर्वप्रथम उन्होंने **माईगोव बेवसाइट** आरम्भ करवाई और आकाशवाणी पर **मन की बात** नामक कार्यक्रम में राष्ट्रीयता, स्वदेशी और भारतीयों के हुनर पर पिछले 11 वर्ष से लगातार बात कर रहे हैं। गरीब से गरीब व्यक्तियों के **करोड़ों बैंक–खाते** खुलवाकर, उन्हें राष्ट्रीय योजनाओं का सीधे लाभ पहुँचाया। दूरदराज के गाँवों में लाखों की संख्या में **शौचालय** बनवाकर लोगों को खुले में शौच करने से रोका। महिलाओं की आँखें ठीक रहें और समय इसके लिए उन्हें लाखों **गैस कनेक्शन** मुफ्त दिए।

dr.amit0190@gmail.com

मुस्लिम महिलाओं को **तीन तलाक**; मुस्लिम पुरुषों की मनमानी नीति से मुक्ति दिलाई। **किसान सम्मान निधि योजना, टैक्स में छूट, जीएसटी** और **नोटबंदी करके नकली नोटों के चलन को रोकना**; उनके कार्यों में प्रमुख हैं। **मेक–इन–इण्डिया, लोकल–फॉर–वोकल** के माध्यम से लोगों को स्वदेशी बनाने और स्वदेशी अपनाने के लिए प्रेरित किया ताकि सन 2047 तक भारत; पूर्ण विकसित देश बन जाए।

विभिन्न देशों की यात्राएँ करके विदेशी नीति को सुदृढ़ बनाया; पड़ोसी देशों से सम्बन्ध मजबूत किए। अमेरिका हो या रूस; जिस देश में वे जाते हैं; वहाँ के नागरिक उनके सम्मान में बड़े–बड़े स्टेडियम में अलग से कार्यक्रम आयोजित करते हैं। वहाँ जब मोदीजी भाषण देते हैं तो घण्टों तक तालियाँ बजती हैं; मोदीजी भीड़ में जाकर लोगों से हाथ मिलाते हैं।

स्वस्थ विश्व के लक्ष्य के लिए **अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस** की पहल की। दुनियाँ ने इसे माना और 21 जून; **अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस** घोषित कर दिया गया। **कोरोना माहमारी** में लॉकडाउन लगाया; शीघ्रता से स्वदेशी को–वैक्सीन बनवाकर देश की जनता के प्राण बचाए। कई देशों को यह वैक्सीन निशुल्क दी। किसी देश में **भूकम्प, बाढ़** या **सुनामी** जैसी त्रासदी आए; उसे मदद पहुँचाने में वे सबसे आगे रहे। आतंकवाद से त्रस्त कश्मीरवासियों को **धारा 370** और **धारा 35ए** हटाकर आतंकवाद से मुक्ति दिलाने में प्रयासरत हैं। जम्मू–कश्मीर में **चुनाव प्रक्रिया** सफलतापूर्वक सम्पन्न कराकर वहाँ के युवाओं को देश की मुख्य धारा से जोड़ दिया।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - LD-20260185781
Date 20/04/2026

देश में **नई संसद** का निर्माण तथा उसमें **सेंगोल** की स्थापना उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाने के लिए; उनके कमरों में पहुँचकर; उनकी पीठ थपथपाई। परिणामस्वरूप देश ने हॉकी की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त किया और औलम्पिक में पदक जीता। महिला तथा पुरुष क्रिकेट टीम ने विश्व कप जीते। राष्ट्रमण्डल खेलों और औलम्पिक खेलों में पदकों की संख्या बढ़ गई। अन्तरिक्ष वैज्ञानिकों को उनकी सफलता–असफलता; दोनों पर गले लगाया। परिणामस्वरूप भारत अन्तरिक्ष में नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।

राष्ट्रीय पर्व और त्यौहारों पर वे देश के वीर सैनिकों के साथ मनाकर उनका मनोबल बढ़ाते हैं। गंगा की शुद्धि के लिए **नमामि गंगे योजना, कांवड़ यात्रा** पर **पुष्प वर्षा** तथा **कुम्भ मेले** पर उनका उत्साह देखते ही बनता है। दीमक की तरह खाए जा रही **चीन को करारा जवाब** दिया। पाकिस्तान को **ऑपरेशन– सिन्दूर** चलाकर ध्वस्त कर दिया। अयोध्या में **राम–मन्दिर** का निर्माण कराकर **सनातन धर्म** की परम्परा को आगे बढ़ाया है।

युद्ध छेड़ने वाले देशों के लिए संदेश दिया; **यह युद्ध का समय नहीं है।** उनकी भावना है कि **सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी न घवरावे, बैर–पाप अभिमान छोड़ जग, नित्य नए मंगल गावे।** दुनियाँ के बड़े–बडे देशों में से 28 देशों ने पीएम मोदी को अपने देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान प्रदान किए; जिनमें से 9 सम्मान उन्हें वर्ष 2024 में मिले हैं।

किसी की बकवास का जबाब अपने प्रभावशाली कार्यों के माध्यम से देना और गाली देने वालों के लिए भी सम्मानजनक भाषा के प्रयोग ने उन्हें, न केवल भारत में लोकप्रियता बल्कि आज वे दुनियाँ के सबसे लोकप्रिय नेता बने हुए हैं। स्पष्ट है कि उनका

dr.amit0190@gmail.com

अपने आप को प्रधान सेवक कहना; उन्हें जनता के दिल में उतरने का मौका देता है। लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बनना; उनकी लोकप्रियता का संकेत है। उनके उत्कृष्ट कार्यों में हमेशा देशवासियों को सन्तुष्ट करने की उत्सुकता दिखती है। हम उन्हें **अहिंसक मोदी** कह सकते हैं। भारत का यह प्रधान सेवक दुनियाँ में आज लोकप्रियता के शिखर पर है। सकारात्मक ऊर्जा के सबसे बड़े स्रोत; मोदीजी के नेतृत्व को मैंने काव्यबद्ध करके तीन कविताओं में प्रस्तुत किया है। उन पर लिखना; सूरज को रोशनी दिखाने जैसा है, किन्तु अपने नायक के लिए यह मेरे हृदय के उद्‌गार हैं।

भारत पर्व; थाली बजाओ–फरफेंदुए भगाओ

रचयिता– डॉ. अमित जैन

सवासौ–करोड़ की बात कर, **पीएम** प्रधान सेवक हो गया,
सभ्यता, शालीनता और मधुर भाषा से, दिलों पर राज उसका हो गया,
नोटबंदी, तीन–सौ सत्तर पर, समर्थन उसे मिल गया
तीन–तलाक, राम मन्दिर पर भी सफल वह हो गया,
असंभव भी संभव हुआ, इस देश में पहली बार था
इससे जनता खुश, विपक्ष परेशान–हैरान था,
सबका साथ, सबका विकास दिनों–दिन फल–फूल ही रहा था
तभी कोरोना की दस्तक हुई, ऐसी अनहोनी किसी ने भी सोची नहीं,
तभी मानो जादू हुआ, एक आवाज पर जनता कर्फ्यू लगा। 1

दीपक जलाओ थाली बजाओ, ये दिल्ली पुकारी थी
अपनेपन से भरपूर ये आवाज सच्ची थी हितकारी थी,
पहली बार किसी **पीएम** ने जनता–जनार्दन से कुछ चाहा
अब जनता की बारी थी, एकजुटता दिखाने की तैयारी थी,
थाली खूब बजी, दिये जले दिवाली मनी
मानो एकता–अखंडता फिर सामने आ गई,
सुन्दर नजारा था, सभी के मन में हर्ष अपार था
यही तो सवासौ–करोड़ का **उसके** लिए प्यार था, दुलार था। 2

थाली की गूँज से सदी का असाधारण नजारा घट गया
पर बहुतों की छाती पर साँप भी लोट गया,
यह देखकर कुछ फरफेंदुए चकरा गये भड़भड़ा गए
खिसियाकर दाँत किटकिटाने लगे,
फेसबुक, सोशल–मीडिया भद्दी टिप्पणियों से भर गई
दिनों–दिन थाली के विरोध में बदतमीजी बढ़ती गई,
पर सवासौ–करोड़ ने नकार दिया; दुत्कारा, फटकारा;
करारा जवाब दिया–
[illegible]न हमें मंजूर नहीं,

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - LD-2026018578
Date 20/04/2026

dr.amit0190@gmail.com

बताओ; नाराजगी थाली बजने से थी या देश के संगठित होने से
फरफेंदुए कुछ न बोले,
जनता समझ गई, थाली का विरोध तो बहाना था
यह तो सीधा–सीधा देश की अखंडता पर निशाना था। 3

फरफेंदुओं की न पूछो, ये कहीं से भी निकल आते हैं
ये दगाबाज कल भी थे, आज भी हैं और आगे भी रहेंगे,
अपनी हिंसक विचारधारा से निर्दोष सीता पर दोष लगाते रहेंगे
गाँधी और आजाद का खून बहाते रहेंगे,
जनता न संभली तो सीता फिर वन को जाएगी
और एक दिन पुनः धरती में समाएगी। 4

पर अब ऐसी अनहोनी शायद ही कभी होगी
क्योंकि अब फैसले में थाली की भी अहम भूमिका होगी,
COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - LD-20260185181
Date 20/04/2026
देखते हैं **प्रधान सेवक** जीतेगा या फरफेंदुओं की हार होगी,
किन्तु एक बात तो निश्चित है;
अब थाली अकेली नहीं, सवासौ–करोड़ की आवाज होगी । 5

पता चलना चाहिए

रचयिता– डॉ. अमित जैन

किताबों में पढ़ा था
बुजुर्गों से सुना था,
बापू पुकारते–
देश इकट्ठा हो जाता,
इतिहास खुद को दोहराता है
यह भी सुना था,
मोदीजी की आवाज पर
देश में जब थाली बजी–
उस दिन पढ़ी हुई और सुनी हुई;
दोनों सच्ची लगीं। 1

शतरंज की गोटियाँ
अब कभी नहीं,
मोहरे बदलने वाले भी मंजूर नहीं,
बहरुपिये अब जग–जाहिर हैं
वक्त का ऐसा बदलाव देखा,
यही सच है या कुछ और
पता चलना चाहिए। 2

dr.amit0190@gmail.com

खोखली बातें नहीं
मकसद भी चाहते हैं लोग,
बदलाव जग जाहिर है
ऐक्सीडेंटल गायब है,
यहाँ चुना हुआ जन–नायक है
लोग उसे शाबासी देते हैं
पैंतरेबाज उसे चोर कहते हैं,
आरोप–प्रत्यारोप भी
नित नये लगाते हैं,
इतना ही नहीं
ये गुपकार, टूलकिट, अफवाह–गैंग
रोहिंग्या के साथ जाते हैं। 3

देश माने न माने
दुनियाँ **प्रधान सेवक** को
अच्छा नेता मानती है,
योग दिवस जैसे–
उनके सुझावों को
हमेशा सराहती है,
यहाँ **सोनू सूद** अंजान राहगीरों को
उनके घर पहुँचाता है,
तो कोई **नेकेड किंग** कविता बनाकर
खूब डराता है। 4

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - LD-20260185781
Date 20/04/2026

लगता है आप समझ गए
जो मैं कहना चाहता हूँ,
मैं तो बस सत्य और असत्य में
अंतर बताना चाहता हूँ,
आपके समर्थन का ही कमाल है
इसलिए झूठ बेनकाब है,
हे समीक्षक!
रोमांचित नहीं, सजग हो जाइए
यदि आपकी समझ में आ गई,
तो मैं समझूँगा
मेरी पढ़ाई देश के काम आ गई। 5

पाप के बाप

रचयिता– डॉ. अमित जैन

गंगा की सुगंध
तमीजदारों को आती है,

dr.amit0190@gmail.com

अपनी हाँकने वाले
सिर्फ मुर्दे बहाते हैं,
नदियों को गंदा करने वालों
मनमानी बंद करो,
साहेब नंगा नहीं, नंगे तुम हो। 1

ऑक्सीजन थी पर्याप्त
वैक्सीन भी कर दी बर्बाद,
हॉस्पीटल मेडीकल
लकड़ी वाला या चाण्डाल,
कोरोना की लेकर आड़
चलाते रहे अपना राज,
ये कारीगरी दिखाते गए
मँहगाई में आग लगाते गए,
दुर्जनों ने ऐसा खेला खेल
मुर्दों की भी बना दी रेल,
नित नये किये कमाल
सब हो गये मालामाल,
अफवाह फैलाना बंद करो
साहेब नंगा नहीं, नंगे तुम हो। 2

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - LD-20260185781
Date 20/04/2026

लालच यहाँ नया नहीं
परम्परा में है,
परिणाम में
देश ने मुगल झेले,
अंग्रेज भी यहाँ खूब खेले
सुखदेव, राजगुरु और भगत
चढ़ा दिये झूठी गवाही की भेंट,
आजाद की मौत भी
तुम्हीं ने खरीदी थी,
राष्ट्रपिता गाँधीजी की विदाई भी
गोली मारकर की थी,
जय–जवान, जय–किसान
जिनका नारा था,
धरती के उस लाल
शास्त्री की मौत भी है
अब तक राज,
जब आँख वाले अंधे ने लिखा
तो उसे राजा नंगा दिखा,
बेकार की बातें बंद करो
साहेब नंगा नहीं, नंगे तुम हो। 3

dr.amit0190@gmail.com

हे दुर्बुद्धि! हे कुबुद्धि!
तुम किसी को आधी रोटी
देने वाले नहीं
तुम तो छीनने वाले हो,
राजा और तुम्हारे बीच में
हम हैं
आगे नहीं बढ़ने देंगे,
तुम पाप के बाप हो
साहेब नंगा नहीं, नंगे तुम हो। 4

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता; जिम्मेदारी के साथ है

भारतीय संविधान के सबसे खूबसूरत स्तम्भ; अभिव्यक्ति की आजादी का उस समय दुरुपयोग होते दिखता है जब अवसरवादी लोग; विषय की गम्भीरता को बिना जाने, आधे–अधूरे ज्ञान के साथ, बिना शोध एवं उचित विश्लेषण किए ही, राष्ट्रनायकों पर कुछ भी बोल देते हैं। बड़े–बड़े बुद्धिजीवी ऐसा करते हैं; फँस जाते हैं तो सॉरी बोलकर बच जाते हैं।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - LD-20260185781
Date 20/04/2026

अभिव्यक्ति की आजादी लोकतंत्र का अहम हिस्सा तो है, किन्तु यह अधिकार असीमित नहीं है; इसमें कुछ सीमाएँ लगाई गई हैं। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19(1)(a) के अन्तर्गत हिंसा, घृणा या देश की सुरक्षा को खतरे में डालने वाले भाषण; उचित प्रतिबन्धों के अधीन हैं।

अनुच्छेद 19(2); अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और भाषण की आजादी के अधिकार पर राज्य द्वारा लगाए जा सकने वाले उचित प्रतिबन्धों का प्रावधान करता है। जो भारत की संप्रभुता, अखण्डता, सुरक्षा, विदेशी सम्बन्धों, सार्वजनिक व्यवस्था, नैतिकता, अदालत की अवमानना, मानहानि और अपराध के उकसावे जैसे आधारों पर होते हैं, क्योंकि यह स्वतंत्रता असीमित नहीं है।

शोध विश्लेषण

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एक मौलिक अधिकार है जो अपनी बात कहने और दूसरों की बात सुनने का मौका देता है, लेकिन यह जिम्मेदारी के साथ आती है, ताकि समाज में शान्ति और व्यवस्था बनी रहे और दूसरों के अधिकारों का उल्लंघन न हो। यहाँ लोगों को अपने ज्ञान के अनुपात अर्थात् विवेक का प्रयोग करना चाहिए। राष्ट्रनायक अपनी; राष्ट्र सर्वोपरि की भावना एवं सर्वजनहिताय सोच से लोकप्रिय होते हैं। ये राष्ट्रीय धरोहर हैं; तपा हुआ सोना हैं। जीवन का स्वर्णिम समय राष्ट्रहित में समर्पित कर, इन्होंने राष्ट्रनायक के स्तर को छुआ है। **राष्ट्रनायकों को अपशब्द न कहें, वे हमेशा सम्मान के हकदार हैं।** राष्ट्रनायकों की कीर्ति को कलंकित करने का प्रयास राष्ट्रद्रोह के समान माना जाना चाहिए।

निष्कर्ष

दुनियाँ के जिन देशों में विस्तारवादी नीतियाँ लागू हैं एवं सत्ता में बने रहने के लिए; जहाँ [illegible] ल दिए जाते हैं; ऐसे देश पिछले कई दशकों से युद्ध लड़ रहे हैं। वे इस बात

dr.amit0190@gmail.com

से अनजान नहीं हैं कि उनके मानवता विरोधी कृत्य से दुनियाँ नष्टता की ओर बढ़ रही है; पर्यावरण बेहाल हो रहा है; प्रकृति चक्र असामान्य हो रहा है। इसका कारण है कि उन देशों के पास ऐसे राष्ट्रनायकों का सर्वथा अभाव रहा है जो लोकतंत्र के समर्थक होते हैं। लोकतांत्रिक मूल्यों का मतलब जानने वाले राष्ट्रनायक; अच्छी तरह समझते हैं कि वो अपनी धरती से हजारों किलोमीटर दूर भी यदि युद्ध लड़ेंगे तो भी उसकी आग, उनके देश के नागरिकों तक पहुँचकर, उन्हें हानि पहुँचा सकती है। इसलिए वे सर्वप्रथम दुश्मन देश के साथ वार्ता के अवसर तलाशते हैं, ताकि आशानरूप परिणाम प्राप्त हो सके और लोगों का जीवन; संकट में न पड़े तथा राष्ट्र की सम्पत्ति को भी नुकसान न पहुँचे। राष्ट्रनायक; अंतिम विकल्प मानकर; युद्ध को जितना हो सके, उतना टालते हैं।

भारत देश इस मामले में भाग्यशाली है कि यहाँ राष्ट्रनायकों की लम्बी कतार होने के बाद भी, सभी लोकतन्त्र के समर्थक रहे हैं। युद्ध का न किसी ने कभी समर्थन किया और न कभी अपनी ओर से किसी देश के विरुद्ध युद्ध छेड़ा। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी अहिंसक विचारधारा के थे और लोकतांत्रिक मूल्यों का समर्थन करते थे। उनके अनुसार– हिंसा से कभी किसी समस्या का समाधान नहीं निकलता। भारतीय सेना सुदृढ़ और शक्तिशाली होने के बावजूद भी; कभी अपनी तरफ से युद्ध नहीं छेड़ती है। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीजी; दुनिया को संदेश देते हैं कि **यह युद्ध का समय नहीं है।** लोकतंत्र के समर्थक; इन राष्ट्रनायकों के जीवन को काव्यबद्ध करके, ये कविताएँ लिखकर; सत्य का संदेश देने का प्रयास कर रहा हूँ , क्योंकि मैं भी एक राष्ट्रनायक का वंशज हूँ। किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाना मेरा उद्देश्य नहीं है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - LD-20260185781
Date 20/04/2026

आभार

मैं; **'डॉ0 अमित जैन'** पुत्र श्रीमती पुष्पा जैन एवं बसन्त कुमार जैन; **'श्रीधर्मश्रुत शोध संस्थान' एवं 'मुनिश्री संवेगसागर त्यागी–व्रती आश्रम'**; स्थित–नसियाजी कोटला रोड़ फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश का आभार व्यक्त करता हूँ। इस संस्थान के संस्थापक और मेरे **पूज्य गुरुदेव 'प्रज्ञाश्रमण मुनि अमितसागरजी महाराज' के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ** कि उनके आशीर्वाद से भारत के राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीजी तथा अन्य राष्ट्रनायकों से सम्बन्धित कई पुराने ग्रन्थ मुझे; यहाँ पर सरलता से प्राप्त हो गए; जिनकी इस शोध में बहुत आवश्यकता थी। इस ग्रन्थालय में हजारों वर्ष **'प्राचीन पाण्डुलिपियाँ' 'स्वर्णाक्षर'** एवं **'रजत अक्षरों'** से लिखित **'ग्रन्थ' 'ताड़पत्र'** तथा **'ताम्रपत्र'** पर लिखित ग्रन्थ उपलब्ध हैं। भविष्य में यह संस्थान शोधार्थियों के लिए देश के शीर्षस्थ संस्थानों में से एक होगा।

शोधकर्ता का भाव

मेरी पूज्य माता श्रीमती पुष्पा जैन के पिता श्री पन्नालाल जैन 'सरल' (जन्म– 19 अगस्त 1919, मृत्यु– 2 सितम्बर 1998) उत्तर प्रदेश के जिला फिरोजाबाद के नारखी गाँव में जन्मे; महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं पक्के काँग्रेसी थे। जेल यात्रा को जाते समय; मेरी पूज्य नानी श्रीमती महारानी देवी जैन ने तिलक लगाकर और आरती उतारकर; उन्हें विदा किया था। नारखी गाँव में सिरसा नदी पर श्रमदान द्वारा बनवाया गया पुल और उस क्षेत्र का विकास; उनके योगदान की कहानी स्वयं बताता है। ऐसे राष्ट्रनायक के परिवार में जन्म ...वन का सबसे बढ़ा दिन था। नानाजी मुझे स्वतंत्रता संग्राम से सम्बन्धित कई

dr.amit0190@gmail.com

प्रसंग, अनुभव और आपबीती सुनाते थे; महात्मा गाँधी, सुभाषचन्द्र बोस, चन्द्रशेखर 'आजाद', सरदार भगतसिंह को महान क्रान्तिकारी तथा अमर शहीद बताया। अपने अंतिम समय में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को सर्वश्रेष्ठ नेता बताते थे। चौबीस वर्ष अपने नाना के साथ रहकर जो सीखा; उस अनुभूति को शब्दों में नहीं लिखा जा सकता, किन्तु राष्ट्रनायकों की जो छवि नानाजी के हृदय में अंकित थी; इस शोध के माध्यम से मैं; उसे काव्यबद्ध करके; कविता—रूप में लिखने में अवश्य सफल हुआ हूँ।

अभिस्वीकृति

राष्ट्रनायक—काव्यांजलि नामक विषय पर राष्ट्रीयता की भावना से ओत—प्रोत यह शोध मेरा; (डॉ. अमित जैन) मौलिक कार्य है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीजी, भारत देश की महान सेना और वीर—सपूत सैनिक तथा भारत के माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदीजी को यह शोध; समर्पित करता हूँ।

सन्दर्भ

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - LD-20260185781
Date 20/04/2026

1. **फिरोजाबाद जनपद नई दिशाएँ (फिरोजाबाद का इतिहास), संयुक्त संपादक**—पन्नालाल जैन सरल, **लेखक एवं संपादक**—राजपति दुबे 'बालेन्दु', **प्रथम संस्करण**—24 अक्टूबर 1993 (विक्रम संवत 2050) को विजयादशमी के दिन, अवैतनिक **संपादक**—पन्नालाल लैन सरल, राजपति दुबे बालेन्दु (फिरोजाबाद केसरी पाक्षिक) **प्रिंटिंग प्रेस**—माधुरी प्रिन्टर्स फिरोजाबाद, **सहयोगी प्रेस**—पालीवाल प्रिन्टर्स शिकोहाबाद, राज प्रिन्टर्स जीवनी मण्डी आगरा, **प्रेस कार्यकर्ता**—विनोद कुमार, धीरेन्द्र श्रीवास्तव, **आभरण**—राष्ट्रीय ब्लॉक एवं प्रिंटिंग वर्क्स, जौहरी बाजार आगरा, **जिल्द सज्जाकार**—बलवीर सिंह, **छायाकार**—अजन्ता स्टूडियो शिवाजी मार्ग फिरोजाबाद। लोकार्पण 29 अक्टूबर 1993।

2. **स्वतंत्रता संग्राम में जैन (प्रथम खण्ड)—अमर जैन शहीदों तथा मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल तथ राजस्थान के जैन स्वतंत्रता सेनानियों का परिचय**, लेखक—डॉ. कपूरचंद्र जैन एवं डॉ. श्रीमती ज्योति जैन, प्रकाशक—सर्वोदय फाउण्डेशन खतौली उत्तर प्रदेश, आईएसबीएन—81—902995—0—6, द्वितीय संस्करण—2006 ईसवीं, मुद्रक—दीपा प्रिंटर्स 70ए रामा रोड़, इण्डस्ट्रियल ऐरिया, नई दिल्ली—110015, पुर्ण्याजय—श्री अशोक पाटनी आरके मार्बल्स, मदनगंज किशनगढ़ (राजस्थान), प्राप्ति स्थान—कुन्दकुन्द महाविद्यालय परिसर, खतौली—251201, उत्तर प्रदेश, श्री दिगम्बर जैन लाल मन्दिर, चॉदनी चौक, नई दिल्ली।

3. **फिरोजाबाद परिचय लेखक—गणेशलाल शर्मा 'प्राणेश'** एम.ए. साहित्यरत्न, प्रकाशक—फिरोजाबाद परिचय प्रकाशन समिति, शारदा सदन हनुमान गंज फिरोजाबाद, प्रकाशन वर्ष— सन् 1962, मुद्रक—राष्ट्रीय इलेक्ट्रीक प्रेस शीतला गली आगरा, अवलोकनार्थ— पृष्ठ संख्या 164, 165

4. **श्रीमद् राजचंद्र (मूल गुजराती का हिन्दी अनुवाद)**— अनुवादक—हंसराज जैन, श्रीमद् राजचंद्र आश्रम अगास, मुद्रक—बाबूलाल जैन फागुल्ल, महावीर प्रेस, भेलूपुर वाराणसी, प्रकाशक—मनुभाई भ. मोदी, अध्यक्ष— श्रीमद् राजचंद्र आश्रम, स्टे. अगास, पोस्ट—बोरिया—388130 वाया—आणंद (गुजरात), द्वितीय संस्करण— सन् 1985

5. **सम्पूर्ण गाँधी वाङ्मय (खण्ड—4, 1903 से 1905)**, प्रकाशन विभाग—सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, मुद्रक— जीवणजी डाह्याभाई देसाई, नवजीवन प्रेस, अहमदाबाद—14, प्रकाशन वर्ष— अगस्त 1960

6. **महात्मा गाँधी का विश्वव्यापी प्रभाव**, लेखक और सम्पादक—श्रीकेशव कुमार ठाकुर, प्रकाशक—भगवतीप्रसाद वाजपेयी, संचालक—साहित्य मन्दिर दारागंज प्रयाग, मुद्रक—सत्यवान शर्मा शिशु प्रेस, प्रयाग, प्रकाशन वर्ष—संवत 1987, सन् 1930

7. **हिमालय (साहित्य पुस्तक माला, वर्ष 2, अंक 3—4 गाँधी अंक)**, सम्पादक—जगन्नाथ प्रसाद मिश्र, प्रकाशक—पुस्तक भण्डार हिमालय प्रेस पटना, प्रकाशन वर्ष— संवत 2005, अप्रैल सन् 1948

8. **भारतीय संस्कृति का विदेशों पर प्रभाव**, लेखक—अ.अ.अनन्त, साहित्यरत्न, मुद्रक— शुक्ला प्रिंटिंग प्रेस नजीराबाद लखनऊ, प्रकाशक— श्रीमती नन्दीश्वरी देवी (संचालिका) हिन्दी साहित्य भवन महानगर लखनऊ—6, मुख्य विक्रेता— नवयुग ग्रन्थागार सी—747, महानगर लखनऊ—6, द्वितीय संस्करण— सन् 1974

9. **आचार्य नरेन्द्रदेव**, लेखक— जगदीशचन्द्र दीक्षित, सभापति उत्तर प्रदेश विधान परिषद्, सूचना एवं जन—सम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश का प्रकाशन, (आचार्य नरेन्द्रदेव शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित), प्रथम संस्करण—सितम्बर सन् 1989, मुद्रक—रोहिताश्व प्रिंटर्स, 268 ऐशबाग रोड़ लखनऊ—226004

10. **आधुनिक भारत का इतिहास (1707 से आज तक)**, लेखक—विद्याधर महाजन 11वां संस्करण सन् 1994, प्रकाशक— एस.चन्द्र कम्पनी लिमिटेड, रामनगर नई दिल्ली—110055

11. **स्वतंत्रता संघर्ष**, लेखक—प्रोफेसर विपिनचन्द्र (सेन्टर फॉर हिस्टोरिकल स्टडीज, स्कूल ऑफ सोशल ... जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली एवं मृदुला मुखर्जी, आदित्य मुखर्जी, क.न. पनिकर, सुचेता

महाजन), हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, प्रकाशन सहयोग– मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली, सन् 1995

12. भारत का संविधान–एक परिचय, लेखक–पद्मभूषण डॉ. दुर्गा दास बसु (सेवानिवृत्त न्यायाधीश कलकत्ता उच्च न्यायालय), अनुवादक–ब्रजकिशोर शर्मा (पूर्व अपर सचिव–विधि, न्याय और कम्पनी कार्य मंत्रालय भारत सरकार), प्रकाशक–प्रेन्टिस हॉल ऑफ इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, ISBN-81-203-0965-0, मुद्रक–सिंडिकेट वाइंडर्स बी–167, ओखला इण्डस्ट्रियल ऐरिया फेज–1, नई दिल्ली–110020

13. सैनिकों की वीरता का अध्ययन

14. रूस–यूक्रेन युद्ध का अध्ययन

15. भारत के अमर शहीदों तथा राष्ट्रनायकों पर एकत्रित जानकारी का अध्ययन

16. प्रतियोगिता दर्पण के महत्वपूर्ण विशेषांक

17. पूर्व माननीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की कविताएँ

18. माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के भाषणों एवं कार्यकाल का अध्ययन

19. राष्ट्रकवियों द्वारा देश भक्ति पर लिखे गए गद्य एवं पद्य

20. विभिन्न समाचार पत्रों के सम्पादकीय आदि

21. स्वयं का मतिज्ञान और श्रुतज्ञान

22. प्रथम विश्व युद्ध का अध्ययन; जिसमें ब्रिटिश सेना की ओर से युद्ध करते हुए 74187 भारतीय सैनिक शहीद हुए थे तथा 67000 से अधिक घायल भी हुए थे।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - LD-20260185781
Date 20/04/2026

डॉ. अमित जैन
शोधकर्ता एवं रचनाकार

dr.amit0190@gmail.com